इकाई

2 समसामयिक मुद्दे

हमारे आस–पास सामाजिक–राजनैतिक क्षेत्र के ऐसे कई समसामयिक मुद्दे हैं जिन पर हमें पढ़ने, विचार विमर्श करने और एक चेतना विकसित करने की आवश्यकता है। हम रोजमर्रा में ऐसे विषयों से रूबरू होते रहते हैं और कई बार हम उनकी ओर सचेत रूप से ध्यान नहीं देते हैं या कई बार हमारे पास वह नजरिया भी नहीं होता है जिनके माध्यम से उनका विश्लेषण कर पाएँ। इस इकाई में यह प्रयास किया गया है कि विद्यार्थियों में वह नजरिया व समालोचनात्मक दृष्टि विकसित हो जिससे वे सामाजिक–राजनैतिक यथार्थ को समझ पाएँ।

मैं मजूदर हूँ एक विचारात्मक लेख है जिसमें लेखक ने मजदूर वर्ग की कहानी को आत्मकथात्मक शैली में लिखा है और यह बताने का प्रयास किया है कि इस दुनिया के वर्तमान स्वरुप तक विकसित होने की यात्रा में मजदूर वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन मजदूरों की अपनी जिन्दगी पहले की तरह आज भी अभावग्रस्त है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता **जनतंत्र का जन्म** 1950 में संविधान लागू होने के समय लिखी गई थी। यह कविता आमजन में निहित शक्ति से हमारा परिचय करवाती है और आमजनता के हाथ में शासन सूत्र सौंप देने का आह्वान करती है।

अपनी–अपनी बीमारी हरिशंकर परसाई जी की व्यंग्य रचना है। इस रचना में समाज में लोगों के अलग–अलग प्रकार के व्यवहार को उजागर करने का प्रयास हुआ है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो वास्तविक दुखों से दुखी हैं, लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो सम्पन्नता से उपजे दुखों या यह कहें कि और अधिक की लालसा से दुखी हैं और चाहते हैं कि दूसरे अपने वास्तविक दुखों को भूलकर उनके छद्म दुखों में दुखी हों।

●●●